International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, July-December 2024, Submitted in September 2024, ISSN -2393-8048

फसल प्रकार एवं किसानों की सहभागिता: सिरसा जिले के संबंध में "एक भौगोलिक अध्ययन"

अशोक कुमार, शोधार्थी (भूगोल विभाग) टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर
डॉ. अन्नु अरोड़ा, सहायक आचार्य (भूगोल विभाग) टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र हरियाणा के सिरसा जिले में प्रचलित फसल प्रतिरूप (Crop Patterns) और उनमें किसानों की सक्रिय भागीदारी का विश्लेषण करता है। सिरसा जिला, जो राज्य का सबसे बड़ा कपास और गेहूं उत्पादक क्षेत्र है, अपनी कृषि विविधता के लिए प्रसिद्ध है। शोध का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि सिंचाई सुविधाओं, मिट्टी की प्रकृति और बाजार की मांग के अनुसार किसान अपनी फसलों का चयन कैसे करते हैं। साथ ही, कृषि नवाचारों और सरकारी योजनाओं में किसानों की सहभागिता के स्तर का भी मूल्यांकन किया गया है। निष्कर्ष बताते हैं कि तकनीकी सहभागिता बढ़ने से पारंपरिक खेती अब व्यावसायिक खेती की ओर अग्रसर है।

परिचय

सिरसा जिला हरियाणा के उत्तर–पश्चिमी भाग में स्थित है, जो भौगोलिक रूप से राजस्थान और पंजाब की सीमाओं को स्पर्श करता है। यहाँ की कृषि न केवल आजीविका का साधन है, बल्कि एक प्रमुख आर्थिक गतिविधि भी है।

भौगोलिक पृष्ठभूमिरू जिले की मिट्टी रेतीली दोमट है और जलवायु अर्ध–शुष्क है। यहाँ घग्गर नदी और नहरों का जाल कृषि का आधार है।

फसल चक्रः सिरसा में मुख्य रूप से 'नरमा' (कपास) और गेहूं का चक्र प्रचलित है।

सहभागिता का अथर्रू किसानों की सहभागिता से तात्पर्य बीज चयन, जल प्रबंधन, आधुनिक यंत्रों के प्रयोग और किसान उत्पादक संगठनों (FPO) में उनकी भागीदारी से है।

साहित्य समीक्षा

भाला और सिंह (2012): के अनुसार, हरियाणा के पश्चिमी जिलों में सिंचाई के विस्तार ने फसल विविधीकरण को जन्म दिया है।

जिला सांख्यिकी रिपोर्ट (2023): के आंकड़े बताते हैं कि सिरसा में बागवानी (विशेषकर किन्नू) की ओर किसानों का झुकाव बढ़ा है।

एम.एस. रंधावाः की रचनाओं में पंजाब और हरियाणा के किसानों की उद्यमशीलता (Entrepreneurship) और नई तकनीकों को अपनाने की गति का उल्लेख मिलता है।

प्रस्तावित शोध के सोपान

शोध को व्यवस्थित करने के लिए निम्नलिखित चरणों का प्रस्ताव हैरू

क्षेत्र का चयनरू सिरसा के विभिन्न ब्लॉकों (जैसे नाथूसरी चोपटा, ओढ़ां, और रानियां) का चयन।

सर्वेक्षण डिजाइनरू किसानों के लिए प्रश्नावली तैयार करना।

आंकड़ा संग्रहणरू प्राथमिक और द्वितीयक आंकड़ों को एकत्रित करना।

तुलनात्मक अध्ययनरू बड़े बनाम सीमांत किसानों की सहभागिता का अंतर स्पष्ट करना।

विधि तंत्र

अध्ययन में मिश्रित शोध पद्धति का उपयोग किया गया हैः

नमूना चयन (Sampling): जिले के 10 गांवों से 200 किसानों का रैंडम सैंपलिंग के आधार पर चयन।

उपकरणः साक्षात्कार, प्रत्यक्ष अवलोकन और फोकस ग्रुप डिस्कशन (FGD)।

सांख्यिकीय विश्लेषणः आंकड़ों के विश्लेषण के लिए प्रतिशत, औसत और को–रिलेशन (Correlation) का उपयोग।

शोध समस्या

सिरसा जिला कृषि में अग्रणी होने के बावजूद कुछ गंभीर समस्याओं से जूझ रहा हैः

फसल एकरूपताः लंबे समय से कपास–गेहूं चक्र के कारण मिट्टी की उर्वरता कम होना।

सहभागिता में बाधाएंः छोटे किसानों के पास आधुनिक यंत्रों और बाजार सूचनाओं तक पहुंच का अभाव।

प्राकृतिक आपदाएंः गुलाबी सुंडी (Pink Bollworm) का कपास पर हमला और बेमौसम बारिश।

उद्देश्य

सिरसा जिले में वर्तमान फसल प्रतिरूप (खरीफ और रबी) का विश्लेषण करना।

कृषि संबंधी निर्णयों में किसानों की सहभागिता के स्तर को मापना।

फसल चयन को प्रभावित करने वाले कारकों (भौगोलिक, आर्थिक और तकनीकी) की पहचान करना।
किसानों की समस्याओं के समाधान हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

परिकलपना

H1: उन्नत सिंचाई सुविधाओं वाले क्षेत्रों में किसान पारंपरिक फसलों के बजाय बागवानी और नकदी फसलों में अधिक सहभागिता दिखाते हैं।

H2: शिक्षित और युवा किसानों की कृषि नवाचारों (जैसे मृदा स्वास्थ्य कार्ड, ई–नाम) में सहभागिता अधिक ळें

महत्व

शैक्षणिक महत्वः यह भौगोलिक और कृषि शोध के छात्रों के लिए आधार प्रदान करता है।
सामाजिक महत्वः किसानों की सहभागिता बढ़ने से ग्रामीण सशक्तिकरण को बढ़ावा मिलता है।
आर्थिक महत्वः फसल चयन में सुधार से प्रति एकड़ आय में वृद्धि की संभावनाओं को उजागर करता है।

विश्लेषण एवं चर्चा

सिरसा के मुख्य फसल प्रकारः कपास (नरमा), गेहूं, सरसों, ग्वार, और किन्नू का विस्तृत विवरण।
सहभागिता के आयामः बीज उपचार, जैविक खेती की ओर झुकाव, और ड्रिप सिंचाई अपनाना।
बाजार और सहभागिताः सिरसा की अनाज मंडी का प्रभाव और किसानों का मंडीकरण ज्ञान।

निष्कर्ष

अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि सिरसा जिले में फसल प्रकार अब केवल जीवन निर्वाह तक सीमित नहीं हैं, बल्कि यह पूर्णतः व्यावसायिक हो चुके हैं। किसानों की सहभागिता में तकनीकी बदलाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। हालांकि, छोटे और सीमांत किसानों को सहकारी समितियों और सरकारी सहायता के माध्यम से अधिक जोड़ने की आवश्यकता है। यदि फसल विविधीकरण को बढ़ावा दिया जाए, तो सिरसा कृषि के क्षेत्र में एक आदर्श जिला बन सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

हरियाणा सरकारः सांख्यिकीय सारांश (2021–22), आर्थिक और सांख्यिकी विश्लेषण विभाग।
हुसैन, माजिदः कृषि भूगोल (संशोधित संस्करण), रावत पब्लिकेशन्स।
सिंह, जसबीरः हरियाणा का कृषि एटलस।
ICAR&CICR रिपोर्टर्स उत्तर भारत में कपास उत्पादन की चुनौतियाँ (2022)।
स्थानीय समाचार पत्र और कृषि पत्रिकाएँः सिरसा कृषि विज्ञान केंद्र (KVK) के प्रकाशन।